International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 04(II), October - December, 2022, pp. 208-212

भारत में सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन और महिलाएं: बीकानेर जिले के सन्दर्भ में एक आनुभविक समाजशास्त्रीय अध्ययन

अशोक कुमार*
डॉ प्रताप पिंजानी**

सार

जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विशेष रूप से वैश्वीकरण की ताकतों के साथ–साथ सामाजिक–सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक परिवेश में परिवर्तन को रेखांकित करते हुए परिवार की भूमिका में अत्यधिक बदलाव आया है। भारत में और विशेष रूप से राजस्थान के बीकानेर जिले में परिवारों की संरचना में उल्लेखनीय और दूरगामी परिवर्तन हुए हैं। महिलाओं में कई स्पष्ट परिवर्तन देखे गए हैं। बीकानेर में रहने वाली 250 महिलाओं से आंकड़ों के आधार पर वर्तमान अध्ययन इंगित करता है कि परिवार के पैटर्न के संदर्भ में, महिलाओं की भूमिका चर्चा के केंद्र बिंदु के रूप में उभरी है।

शब्दकोश: *पारिवारिक पैटर्न, महिलाओं की भूमिका, संबंध, बीकानेर।*

प्रस्तावना

दुनिया भर में, मुख्य रूप से वैश्वीकरण की ताकतों के कारण परिवार के पैटर्न उत्तरोत्तर कई परिवर्तनों से गुजर रहे हैं। इन ताकतों ने विभिन्न देशों में सरकार द्वारा सामाजिक स्तर पर सुधारों के साथ–साथ परिवार के पैटर्न में बदलाव के साथ–साथ महिलाओं की भूमिकाओं और स्थिति में अपरिवर्तनीय परिवर्तन किए हैं। भारत इसका अपवाद नहीं है, हालांकि भौगोलिक भूभाग में देखे गए परिवर्तन विविध रहे हैं।

पिछले पचास वर्षों में यूरोप में पारिवारिक पैटर्न में व्यापक परिवर्तन हुए हैं। 1960 के दशक की शुरुआत में यूरोप में उच्च विवाह और जन्म दर, अपेक्षाकृत कम उम्र, कुछ तलाक और गैर–पारंपरिक पारिवारिक रूपों के कम प्रसार के साथ तथाकथित परिवार के स्वर्ण युग का अंत हुआ।

20 वीं शताब्दी के अंत तक, प्रजनन दर में प्रति महिला 2.1 बच्चों के प्रतिस्थापन स्तर से काफी नीचे गिरावट आई, विवाह और पितृत्व में अधिक परिपक्व उम्र तक देरी हुई, युगल संबंधों के नए रूप सामने आए, जबकि शादी करने की प्रवृत्ति में कमी आई और बच्चों के साथ वाले जोड़ों में भी परिवार का विघटन आम हो गया। (फ्रेजका एट अल।, 2008) लोग साझेदारी निर्माण और बच्चे पैदा करने के संबंध में दीर्घकालिक प्रतिबद्धताओं से तेजी से दूर हो रहे हैं, जो पारिवारिक जीवन के पाठ्यक्रम (जोकिनेन और कुरोनेन, 2011) के अमानकीकरण को इंगित करता है, लेकिन लंबे समय में परिवार के पैटर्न के पुनः मानकीकरण का कारण बन सकता है। (हुइनिंक 2013)। फिर भी, दुनिया भर में ये नए पैटर्न किस हद तक और जिस गति से उभरे हैं, उसमें काफी विविधता है।

ज़िम्मरमैन और कोनित्ज़्का (2018) और ज़ैतसेवा, बन्नीख और कोस्टिना (2019) ने पाया कि विकसित और विकासशील दोनों देशों में महिलाओं के रोज़गार में वैवाहिक और अन्य संबंधों, सौंपी गई लैंगिक भूमिकाओं, सामाजिक और भावनात्मक पारिवारिक संबंधों को प्रभावित करने की क्षमता है। महिलाओं के रोजगार के मामले में, परिवार में भूमिका घर की देखभाल करने से बदल जाती है (इरुंगु और सासा, 2017)।

---

* शोधार्थी एवं सह आचार्य, समाजशास्त्र, राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान।
** शोध निर्देशक एवं सह आचार्य, समाजशास्त्र, राजकीय महाविद्यालय, अजमेर, राजस्थान।

वैश्विक रूप से बदलते पारिवारिक पैटर्न और उसमें महिलाओं की भूमिका विभिन्न मंचों पर चर्चा का विषय रही है। इसलिए, परिवार के सदस्यों को परिवर्तनों को समायोजित करने और महिलाओं की भूमिका की पुनर्कल्पना करने के लिए तदनुसार समायोजित करने की आवश्यकता है।

साहित्य समीक्षा

ब्रिंटन और ओह (2019) ने एशिया में शिक्षित महिलाओं के रोजगार और प्रजनन क्षमता के बारे में एक अध्ययन किया। यह सामने आया कि शिक्षित महिलाओं के जीवन भर निरंतर रोजगार के साथ बच्चों के पालन–पोषण की संभावना बढ़ गई है। शिक्षित महिलाएं और प्रजनन क्षमता में वृद्धि कई उत्तर–औद्योगिक देशों में बहुत कम प्रजनन क्षमता की विशेषता है। ऐसे देशों में, जापान और कोरिया में महिलाओं का असाधारण रूप से कम अनुपात है जो बच्चे पैदा करने के बाद भी कार्यरत रहती हैं।

कबीर (2005)और मैकलवाइन (2019) ने फिलीपींस में निर्यात निर्माण नौकरियों में महिला श्रमिकों का अध्ययन किया। परिणामों से पता चला कि नियोजित महिलाओं के पास शादी और बच्चे के जन्म में देरी करने का अवसर था, और अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में महिलाओं की तुलना में अपेक्षाकृत उच्च वेतन और अपेक्षाकृत स्थिर रोजगार के साथ व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय की गुंजाइश थी, परिणामस्वरूप सत्ता–संरचना में परिवर्तन हुए हैं।

अल्बानेसी (2019), ने अमेरिका में महिलाओं के रोजगार की भूमिका के बारे में एक अध्ययन किया। उन्होंने उत्पादकता पर महिला श्रम आपूर्ति में बदलते रुझानों पर ध्यान किया. पाया कि 1980 के दशक की शुरुआत से महिलाओं की श्रम आपूर्ति और सापेक्ष उत्पादकता में वृद्धि में काफी वृद्धि हुई है।

केली (2020) ने उम्रदराज आबादी और श्रम बल में महिलाओं की भागीदारी का अध्ययन किया, अवैतनिक देखभाल और श्रम बल में महिलाओं की उपलब्धता के बीच संबंध एक मुद्दे के रूप में महत्व प्राप्त कर रहा है। 2001–2014 से जर्मन सामाजिक–आर्थिक पैनल (ॅव्च) का उपयोग करते हुए उन्होंने 6,201 नियोजित महिलाओं के लिए कॉक्स रिग्रेशन मॉडल का अनुमान लगाया। परिणामों ने संकेत दिया कि उच्च देखभाल जिम्मेदारियों वाली महिलाएं और कम देखभाल जिम्मेदारियों वाली महिलाएं सामाजिक विशेषताओं के संदर्भ में विषम हैं जो वे प्रदर्शित करती हैं। उच्च तीव्रता वाले देखभाल प्रदाताओं में शैक्षिक स्तर कम होता है और उन महिलाओं की तुलना में जिनके पास देखभाल करने की कम गहन ज़िम्मेदारियाँ हैं श्रम बल से कमजोर लगाव होता है।

फेरगिना (2019) का विकसित देशों में किये गएअध्ययन का निष्कर्ष हैं कि पिछले दो दशकों के दौरान, उच्च आय वाले देशों में परिवार नीति और महिलाओं के रोजगार के बीच संबंधों पर बहस प्रमुखता से बढ़ी है।

सौम्या और विद्या (2017) का अनुमान 27.000 से अधिक महिलाओं पर 2005 और 2012 में किये गए अनुदैर्ध्य सर्वेक्षण पर है। कंडिशनल लॉजिस्टिक रिग्रेशन और इंस्ट्रुमेंटल वेरिएबल अप्रोच का इस्तेमाल करते हुए इंगित किया गया है कि संयुक्त परिवार में रहने वाली महिलाओं के गैर–कृषि रोजगार में 10प्रतिशत से ज्यादा की कमी आई है।

प्रतिकूल प्रभाव युवा महिलाओं, उच्च सामाजिक स्थिति वाले परिवारों की महिलाओं और उत्तरी भारत में रहने वाली महिलाओं के लिए अधिक है। साक्ष्य बताते हैं कि उच्च शिक्षा महिलाएं मानदंडों से विवश नहीं हैं जो संयुक्त परिवार में महिलाओं की निर्णय लेने की शक्ति और गतिशीलता को कम करती हैं।

शिक्षा में वृद्धि से महिलाओं की कमाई क्षमता के साथ–साथ नौकरियों की गुणवत्ता में वृद्धि होने की संभावना है जो काम के खिलाफ पारिवारिक दबाव को कम करने में मदद कर सकती है। परिणाम बताते हैं कि सार्वजनिक नीतियां जो उच्च शिक्षा को प्रोत्साहित करती हैं, वहनीय बाल देखभाल के साथ नौकरी में सुधार करती हैं, विशेष रूप से संयुक्त परिवार में कम शिक्षा प्राप्त महिलाओं के लिए गैर–कृषि रोजगार बढ़ाएगी।

चूडी शिवराम (2009) ने संयुक्त परिवार में व्याप्त जोखिम भरे व्यक्तिवाद ने पारंपरिक परिवार को विलुप्त होने के कगार पर ला दिया है।इसके अलावा, यदि मौजूदा रुझान जारी रहे, तो 21वीं सदी की शुरुआत समाज के सबसे प्राचीन और प्रभावशाली प्रतिष्ठानों में से एक, संयुक्त परिवार के विलुप्त होने का गवाह है।

संयुक्त परिवार हिंदू विरासत में गहराई से निहित एक पवित्र संस्था है। इसे मजबूत पकड़ के रूप में घोषित किया गया है जिसने सनातन धर्म को भारत के शत्रुतापूर्ण वर्चस्व के माध्यम से अक्षुण्ण रखा है। हाल ही में, इसकी प्रतिष्ठा में गिरावट आई है। हालांकि विस्तारित परिवार ग्रामीण भारत के अधिकांश हिस्सों और कुछ शहरों में हैं,परन्तु संयुक्त परिवारों को ढूंढना कठिन होता जा रहा है।

अनुसंधान क्रियाविधि

शोध अध्ययन करने के लिए, शोधकर्ता ने राजस्थान के बीकानेर जिले में रहने वाली महिलाओं से आंकड़े एकत्र किए। विभिन्न आयामों पर मुख्य रूप से परिवार के पैटर्न पर ध्यान केंद्रित करते हुए और उनके जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में बदलती वास्तविकताओं के संदर्भ में महिलाओं की बदलती भूमिका पर राय लेने के लिए एक अनुसूची तैयार की।

उत्तरदाताओं को 5 प्वाइंट लाइकर्ट स्केल पर अपनी राय देने के लिए फिर से कहा गया, जिसमें पूरी तरह से असहमत से लेकर पूरी तरह सहमत तक शामिल थे। कुल 250 प्रतिक्रियाएं एकत्र की गईं और सांख्यिकीय का विश्लेषण किया गया और निष्कर्ष निकाले गए। बीकानेर जिले के संदर्भ में परिवार के पैटर्न में बदलाव और महिलाओं की भूमिका के विश्लेषण के उद्देश्य के लिए 250 उत्तरदाताओं से सबसे अधिक प्रासंगिक प्रतिक्रियाएं ली गईं। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से ऐसे परिवर्तनों की सराहना करने के लिए भी ऐसा ही किया गया था।

विश्लेषण

प्रतिक्रियाओं का एक अवलोकन इंगित करता है कि, उत्तरदाताओं की राय में, कई वैश्विक ताकतों और सरकार द्वारा किए गए सुधारात्मक उपायों के कारण महिलाओं की भूमिका में विभिन्न परिवर्तन हुए हैं। परिवार का स्वरूप काफी तेजी से बदल रहा है और उत्तरदाताओं द्वारा इसकी पुष्टि की गई है।

सारणी– प्रतिक्रियाओं का सारांश

क्र. सं.	कथन	प्रतिक्रिया (प्रतिशत में)				
		पूर्णतः असहमत	असहमत	उदासीन	सहमत	पूर्णतः सहमत
1	परिवार में एक से अधिक आय अर्जित करने वाले व्यक्ति होने पर परिवार में विघटन की सम्भावना प्रबल होती है।	15.2	23.6	11.6	30.8	18.8
2	वर्तमान समय में महिलाओं के विरुद्ध घरेलू हिंसा के मामले बढ़ गए हैं।	9.6	24	10.8	19.6	36
3	एकल परिवार मे महिलाएं अपेक्षाकृत बेहतर प्रस्थिति एवं सकारात्मक भूमिका को अनुभव करती हैं।	12.4	22.8	5.6	20.4	38.8
4	विवाह और परिवार नामक संस्थाएँ महिलाओं के शोषनकारी बनी हुई।	11.6	21.6	11.2	38	17.6
5	वर्तमान समय में महिलाओं का जीवन के वैकल्पिक तरीको जैसे लव मैरिज लिविंग रिलेशशीप आदि के प्रति रूजान बढ़ रहाहै।	17.2	5.2	18.8	22.8	36
6	भारतीय समाज में पितृ सत्तात्मक प्रणाली आज भी महिलाओं के निजी एवं सार्वजनिक जीवन को निर्धारित करने वाला एक महत्त्वपूर्ण आयाम है।	9.6	21.2	2.4	23.6	43.2
7	महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा क्षेत्रीय गतिशीलता के सीमित अवसर प्राप्त हैं।	10.8	22	8.4	35.6	23.2
8	वर्तमान समय में महिलाओं के पास सामाजिक गतिशीलता के लिए पहले से अधिक अवसर उपलब्ध हैं।	14.8	21.2	7.6	32.8	23.6
9	भारतीय समाज में आज भी ग्लास/सीलींग महिला गतिशीलता के मार्ग में एक बड़ी बाधा है।	15.6	23.6	9.2	35.2	16.4
10	घरेलू हिंसा अधिनियम 2005 ने महिलाओं की पारिवारिक स्थिति को सुदृढ़ किया है।	11.6	27.2	11.2	32.4	17.6

पहले कथन की प्रतिक्रियाओं से पता चला है कि अधिक सदस्यों के वैतनिक नौकरियों में लगे होने से परिवार के विघटन की संभावना है, अधिकांश उत्तरदाता इससे सहमत या अत्यधिक सहमत हैं। तीसरे बयान की प्रतिक्रियाओं से भी इसी का समर्थन किया गया है, जहां करीब 60% उत्तरदाता संयुक्त परिवारों की तुलना में एकल परिवारों में महिलाओं की बेहतर भूमिका और स्थिति से सहमत या अत्यधिक सहमत हैं।

पारिवारिक पैटर्न में बदलाव लाने वाला एक अन्य कारक वैकल्पिक गैर–पारंपरिक जीवन जीने के तरीके जैसे प्रेम विवाह, लिव–इन रिलेशनशिप आदि के लिए बढ़ती स्वीकृति है। उत्तरदाताओं के करीब 3/5 ने जीने के वैकल्पिक तरीकों पर सहमती व्यक्त की।

महिलाओं और समाज के बीच मानसिकता में यह खुलापन बड़े पैमाने पर परिवारों के पैटर्न को बदलने में सहायक रहा है और महिलाओं की भूमिका अधिक निर्णायक होती जा रही है। वैश्वीकरण की ताकतों, आधुनिक शिक्षा और सरकार द्वारा उठाए गए सकारात्मक कदमों के कारण महिलाएं सशक्त हो रही हैं।

महिलाओं की गतिशीलता– सामाजिक में सुधार हो रहा है। उत्तरदाताओं ने आठवें बयान में किए गए दावे का समर्थन किया है, अधिकांश उत्तरदाताओं ने सामाजिक गतिशीलता के लिए बेहतर अवसर के पक्ष में राय दी है।

घरेलू हिंसा अधिनियम, 2005 जैसे विधायी उपायों ने भी महिलाओं के निजी स्थान को सुरक्षित रखने में भूमिका निभाई है और पारिवारिक संबंधों को अधिक मजबूत बनाया है। अधिकांश उत्तरदाताओं ने दसवें बयान में अधिनियम द्वारा निभाई गई सकारात्मक भूमिका के बारे में किए गए दावे का समर्थन किया।

इसके विपरीत, उत्तरदाताओं ने कहा कि वर्तमान समय में घरेलू हिंसा के मामलों में 55% से अधिक दूसरे कथन के समर्थन में वृद्धि हुई है। लगभग समान संख्या में महिलाओं ने कहा कि पारिवारिक संस्था प्रकृति में शोषक रही है, जो चौथे कथन में परिलक्षित होती है।

पितृसत्तात्मक व्यवस्था महिलाओं के निजी और सार्वजनिक जीवन को तय करने वाली एक शक्तिशाली कारक बनी हुई है, जिसका लगभग 70% उत्तरदाताओं ने समर्थन किया है। इसके अलावा, लगभग 60% उत्तरदाताओं ने कहा कि महिलाओं के पास भौगोलिक गतिशीलता के लिए सीमित अवसर हैं।

अंत में, 50% से अधिक उत्तरदाताओं ने सहमति व्यक्त की ग्लास–सीलिंग की अवधारणा अभी भी समाज में बनी हुई हैः, जो महिलाओं की प्रगति में कृत्रिम अवरोध पैदा करती है।

निष्कर्ष

परिवार समाज में मूलभूत संस्था है– एक ऐसी संस्था जो पहचान, भावना, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति, देखभाल, निराशा, पितृसत्तात्मक मानसिकता, प्रजनन श्रम, दमन और प्रभुत्व का एक स्थल है, जो अन्य संस्थाओं में नहीं है। इसमें यह भी आधारभूत है कि जीवन और संस्कृति को लेकर होने वाले विवाद यहीं से शुरू होते हैं। भारत में परिवार की स्थिति केन्द्रीय एवं आलोचनात्मक रही है। परिवार महत्वपूर्ण कार्य करता है जो समाज की बुनियादी जरूरतों में योगदान देता है और सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने में मदद करता है।

परिवार को रिश्तेदारों के संबंधों से सीधे जुड़े व्यक्तियों के समूह के रूप में वर्णित किया जाता है, जिसके वयस्क सदस्य बच्चों की देखभाल करने की जिम्मेदारी हैं। पूर्व की तुलना में पारिवारिक दुनिया अलग प्रतीत होती है, जबकि पारिवारिक एवं वैवाहिक संस्था अभी भी मौजूद है और हमारे लिए महत्वपूर्ण है, हालांकि चारीत्रिक रूप से नाटकीय बदलाव आया है। समाजशास्त्रियों ने परिवार और उसके घटकों में अपने विचार व्यक्त किए हैं।

इसके अलावा, ऐसे कई अध्ययन हुए हैं जो बताते हैं कि शहरों में प्रवासन ने गाँव और कस्बे में वृहद आकार की पारिवारिक इकाई के तेजी से विघटन में योगदान है। वास्तव में पारिवारिक आंकड़ों पर आधारित अवलोकन शहरों में एकल परिवारों का उच्च प्रतिशत दर्शाता है। औद्योगिक समाज में वयस्क व्यक्तियों को स्थिर करने में परिवार की भूमिका मानी जाती है।

इन पारिवारिक संरचनाओं के अलावा कुछ अन्य परिवार भी अस्तित्व में हैं। अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि एकल परिवार और संयुक्त परिवार में वृद्धि का मुख्य कारण सामाजिक रूप से संगठित और आत्मनिर्भर परिवार की आवश्यकता रही है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अल्बनेसी, एस (2019) बदलते व्यापार चक्र महिलाओं के रोजगार की भूमिका (0898–2937)
2. ब्रिंटन, एम.सी., और ओह, ई. (2019) बच्चे, काम, या दोनों? पूर्वी एशिया में उच्च शिक्षित महिलाओं का रोजगार और प्रजनन क्षमता। अमेरिकन जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी, 125(1), 105–140।
3. फेरगिना, ई. (2019) क्या परिवार नीति महिलाओं के रोजगार को प्रभावित करती है ? क्षेत्र में साक्ष्य की समीक्षा करना। पॉलिटिकल स्टडीज रिव्यू, 17(1), 65–80
4. फ्रीजका, टी., सोबोटका, टी., होम, जे.एम., और टूलेमोन, एल.(2008) यूरोप में चाइल्डबियरिंग ट्रेंड्स एंड पॉलिसीज। जनसांख्यिकी अनुसंधान, विशेष संग्रह 7, 1–1178
5. हुइनिंक, जे. (2013) अ–मानकीकरण या जीवन पाठ्यक्रम पैटर्न बदलना? जनसांख्यिकीय दृष्टिकोण से वयस्कता में संक्रमण। नेयर में, जी। एट अल। (एड्स।), यूरोप की जनसांख्यिकी (पीपी। 99–118)। डॉर्ड्रेक्ट स्प्रिंगर।
6. इरुंगु, सी., और सासा, ई.वी. (2017) परिवार की स्थिरता पर महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण का प्रभाव कैज़ेंगा नगर पालिका में किक्सी–क्रेडिटो लाभार्थियों का मामला। अफ्रीकन मल्टीडिसिप्लिनरी जर्नल ऑफ रिसर्च, 2(2)
7. जोकिनेन, के. एंड कुरोनेन, एम.(2011) अध्याय 1: यूरोप में परिवार और परिवार नीतियों पर शोधः प्रमुख रुझान। यू. उहलेंडॉर्फ, एम. रूप और एम. यूटेन्यूअर (एड्स.), वेलबीइंग ऑफ फैमिलीज इन फ्यूचर यूरोप। अनुसंधान और नीति के लिए चुनौतियां। फ़ैमिलीप्लेटफ़ॉर्म – यूरोप वॉल्यूम 1 में परिवार (पीपी। 13–118)
8. कबीर, एन. (2005). लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरणः तीसरी सहस्राब्दी विकास लक्ष्य का एक महत्वपूर्ण विश्लेषण। 1. लिंग और विकास, 13(1), 13–24
9. केली, एन. (2020) रोजगार और देखभाल देने का संयोजनः जर्मनी में मध्यम आयु वर्ग की महिलाओं के बीच अलग–अलग देखभाल की तीव्रता रोजगार पैटर्न को कैसे प्रभावित करती है। एजिंग एंड सोसाइटी, 40(5), 925–943
10. मैकलवाइन, सी. (2019) किनारे या सरहदें? फिलीपींस में लिंग और निर्यात उन्मुख विकास दक्षिण पूर्व एशिया में असमान विकास (पीपी. 100–123): रूटलेज
11. मिनोला, टी., ब्रुमाना, एम., कैम्पोपियानो, जी., गैरेट, आर.पी., और कैसिया, एल. (2016) पारिवारिक व्यवसाय में कॉर्पोरेट उद्यमः उद्यमी परिवार का एक विकासात्मक दृष्टिकोण। सामरिक उद्यमिता जर्नल, 10(4), 395–412
12. सौम्या, डी., और विद्या, एम. (2017) ग्रामीण भारत में पारिवारिक संरचना, शिक्षा और महिलाओं का रोजगार। वाइड वर्किंग पेपर्स (195)
13. ज़ेतसेवा, ई., बन्नीख, जी., और कोस्टिना, एस. (2019) नए औद्योगीकरण के युग में परिवारों का संस्थागत परिवर्तन। नए औद्योगीकरण पर दूसरे अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलन में प्रस्तुत किया गया पेपरः वैश्विक, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय आयाम (SICNI 2018)
14. ज़िम्मरमैन, ओ., और कोनित्ज़का, डी. (2018) विमानकीकरण में सामाजिक विषमताएँ–सात यूरोपीय देशों में पारिवारिक जीवन पद्धति को बदलना। यूरोपियन सोशियोलॉजिकल रिव्यू, 34(1), 64–78.

❖◆❖